

गंगा माता को आरतों: ॐ जय गंगे माता

पद 1

ॐ जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता ॥

पद 2

चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता ॥

पद 3

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता ॥

पद 4

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता ॥

पद 5

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता ॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/ganga-aarti/